रम पम पम

रम पम पम

एक भारतीय लोककथा

बहुत समय पहले भारत में एक ब्लैकबर्ड अपनी पत्नी के साथ एक पेड़ पर रहता था. वह बहुत मधुर आवाज़ में गाता था.
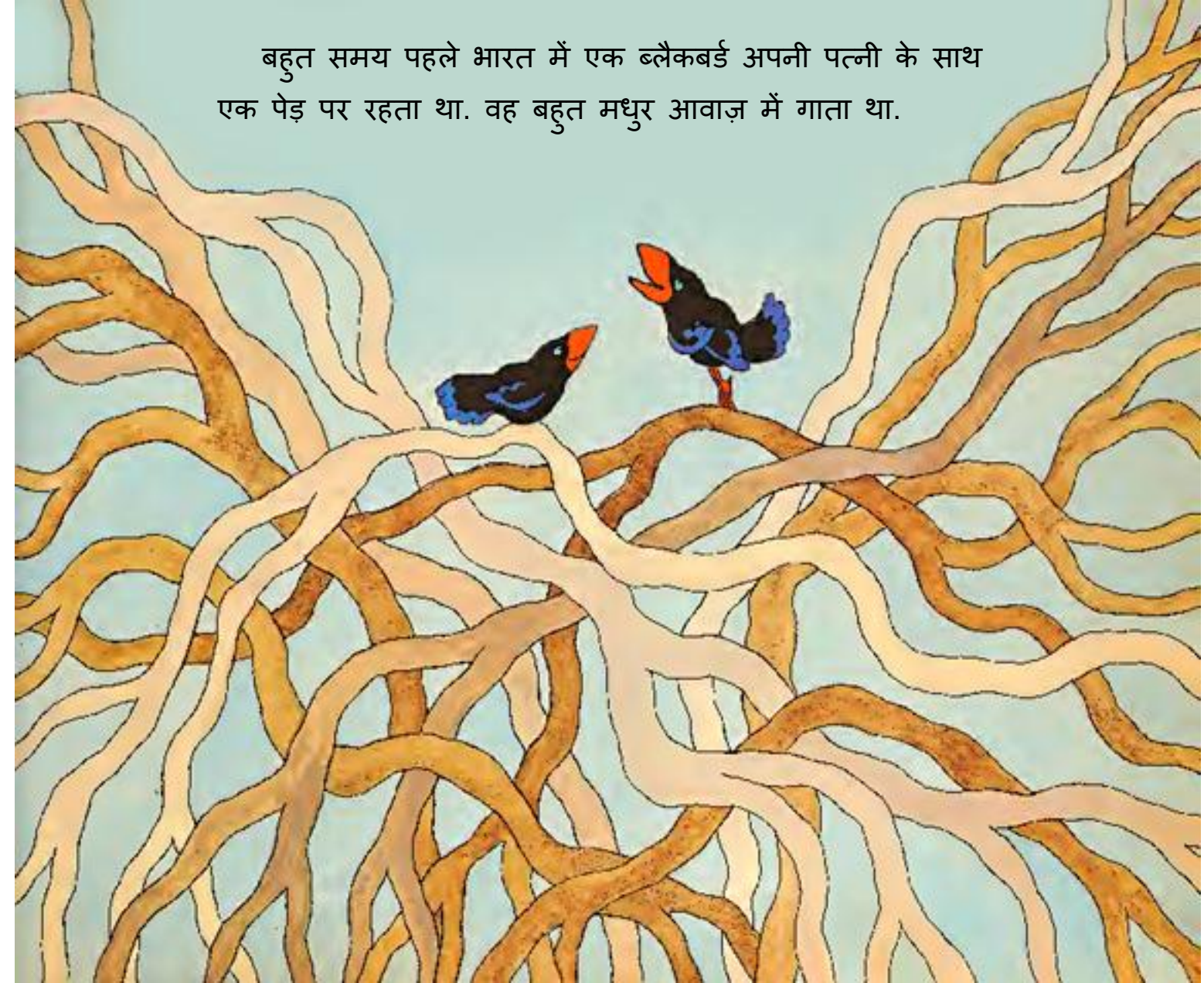
एक दिन जब राजा वहाँ से जा रहा था तो उसने ब्लैकबर्ड का गीत सुना.

“उस मधुर गीत गाने वाले पक्षी को पकड़ कर मेरे पास लाओ,” राजा ने आदेश दिया. “मैं उसे अपने महल में एक पिंजरे में रखूँगा.” राजा के सेवक पक्षी को पकड़ने के लिए दौड़े. लेकिन गलती से वह उसकी पत्नी को पकड़ कर ले आए, क्योंकि दोनों पक्षी एक जैसे दिखते थे और राजा के सेवक उनका अंतर न जान पाए.

जब ब्लैकबर्ड को पता चला कि उसकी पत्नी को राजा के सेवक पकड़ कर ले गए थे तो उसे बहुत गुस्सा आया. उसने निश्चय किया कि वह किसी भी तरह उसे मुक्त करायेगा.

एक लंबे, नुकीले काँटे को ब्लैकबर्ड ने
तलवार समान छाती पर बाँध लिया.

मरे हुए मेंढक की खाल को
ढाल समान पकड़ लिया.

अखरोट के आधे छिलके को शिरस्त्राण
समान सिर पर पहन लिया.

और छिलके के दूसरे हिस्से पर चमड़ा
लगा कर एक नगाड़ा बना लिया.

फिर उसने राजा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी.
और वह राजा के महल की ओर नगाड़ा बजाते हुए चल
दिया, *रम पम पम, रम पम पम, रम पम पम पम पम.*
रम पम पम रम पम पम
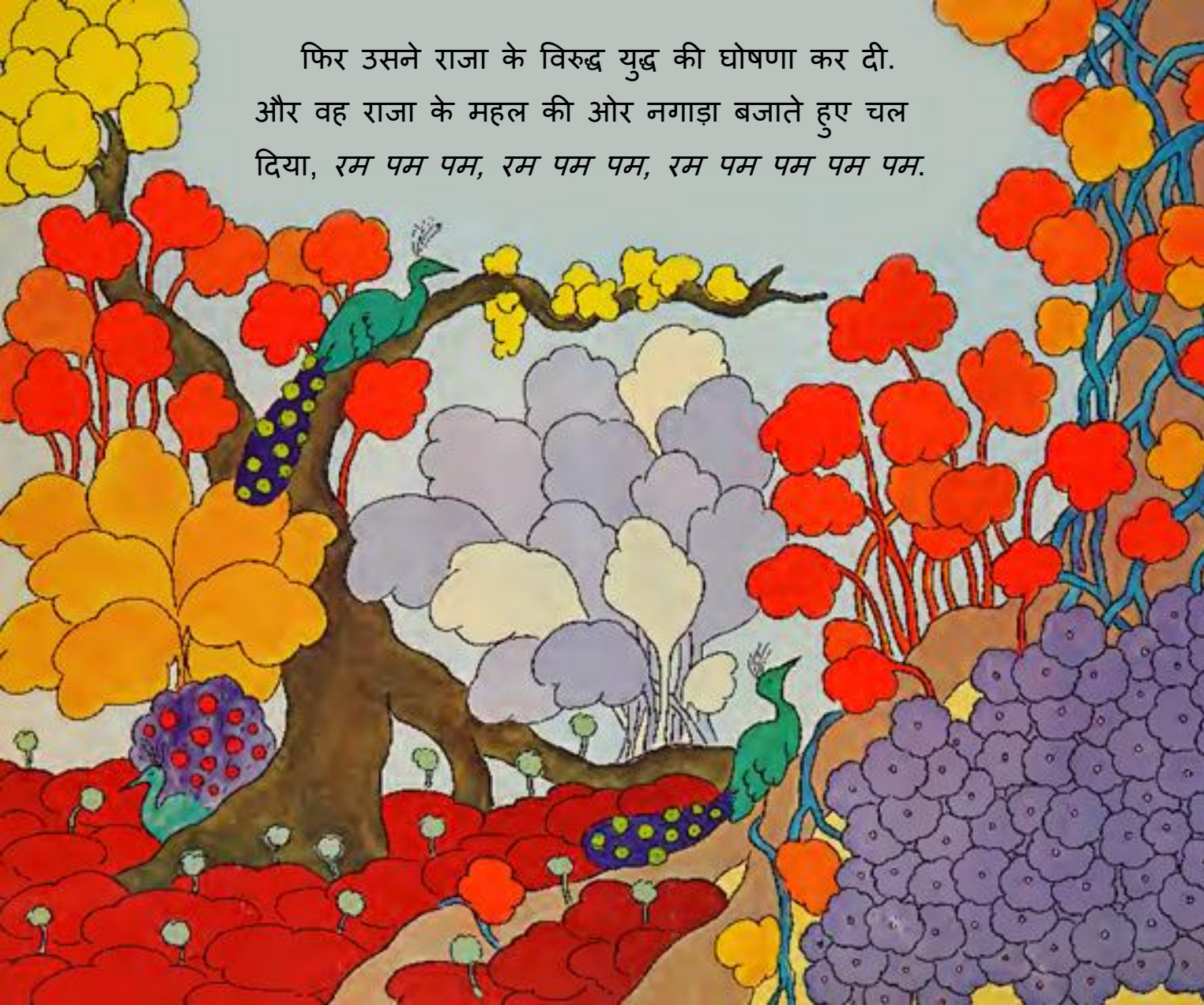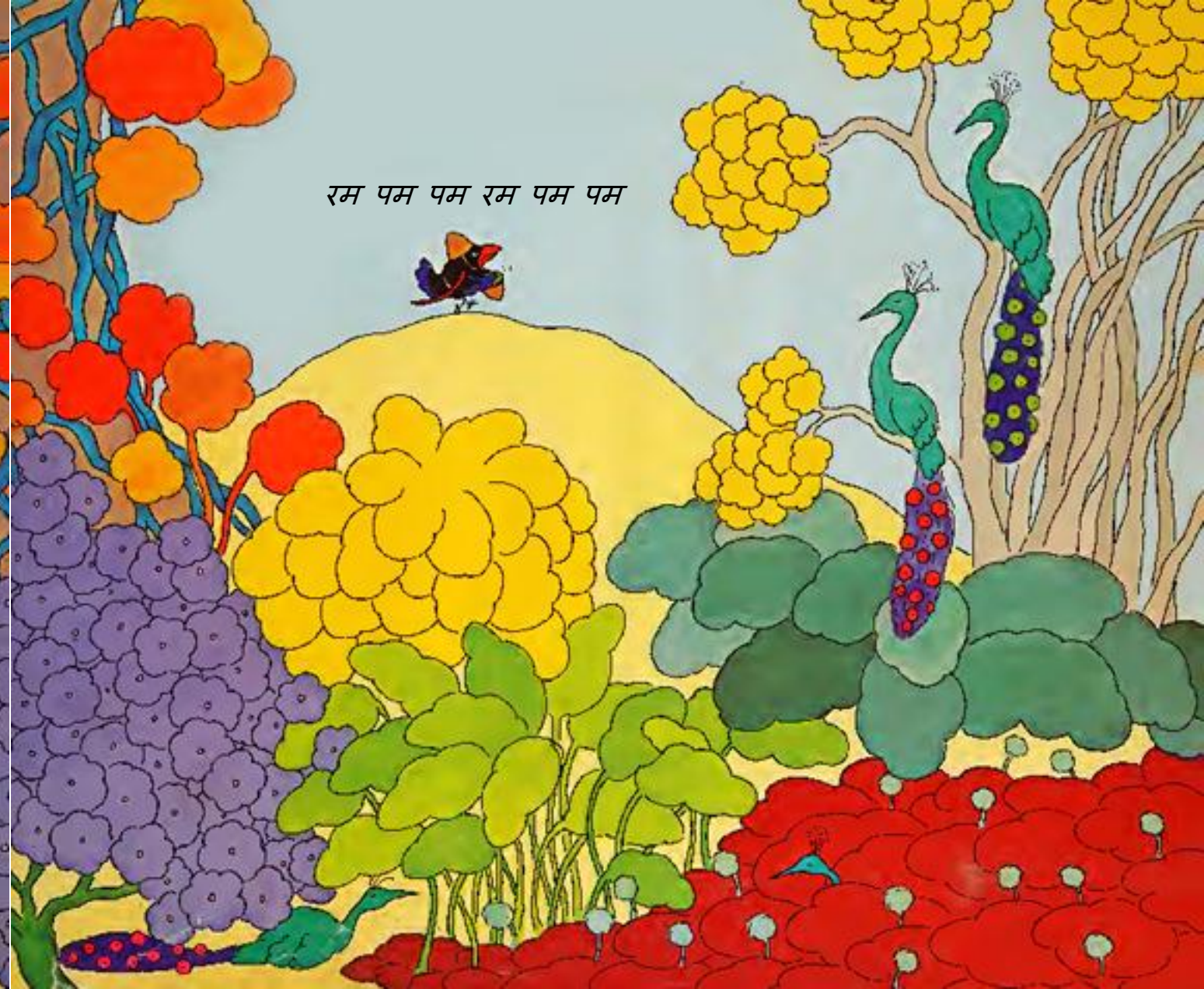
शीघ्र ही वह एक बिल्ली से मिला.
"कहाँ जा रहे हो?" बिल्ली ने पूछा.
"राजा के साथ युद्ध करने. उसने मेरी पत्नी को पकड़ लिया है."
"मैं तुम्हारा साथ दूँगी. राजा ने मेरे बच्चों को डुबो दिया था,"
"कूद कर मेरे कान के अंदर आ जाओ," पक्षी ने कहा.

बिल्ली कूद कर पक्षी के कान के अंदर आ गई और सिकुड़ कर सो गई.
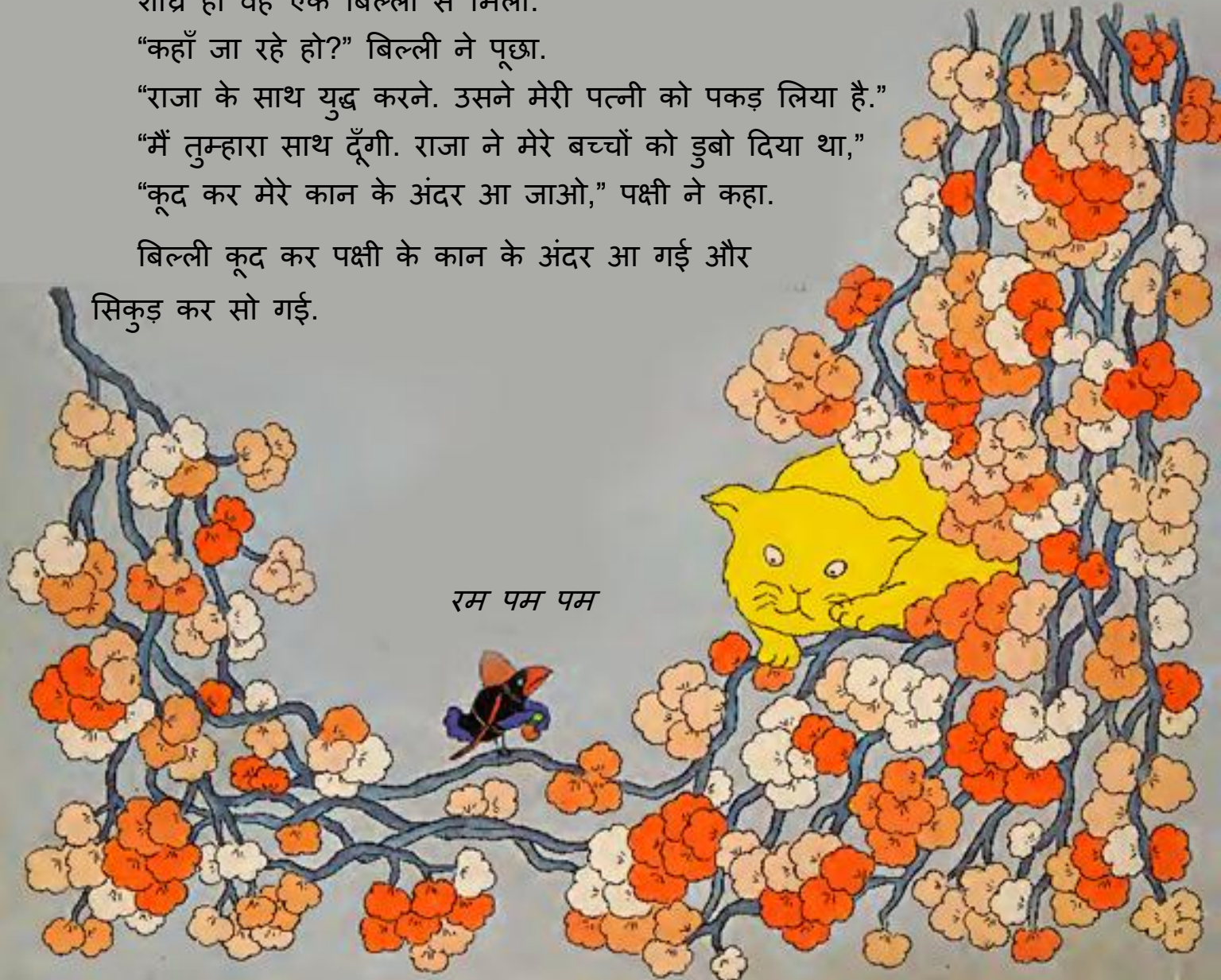
पक्षी नगाड़ा बजाते-बजाते आगे बढ़ता रहा.

रम पम पम, रम पम पम, रम पम पम पम. शीघ्र ही वह कुछ चींटियों से मिला.

"कहाँ जा रहे हो?" चींटियों ने पूछा.

"राजा के साथ युद्ध करने. उसने मेरी पत्नी को पकड़ लिया है."

"हम तुम्हारा साथ देंगी. राजा ने हमारी बाँबी पर उबलता पानी डाल दिया था,"

"तो मेरे कान के अंदर आ जाओ," पक्षी ने कहा. और चींटियाँ कान के अंदर आ गईं.

ब्लैकबर्ड नगाड़ा बजाते-बजाते आगे बढ़ता रहा, *रम पम पम, रम पम पम, रम पम पम पम* जब तक कि एक छड़ी से उसकी भेंट न हुई.

“कहाँ जा रहे हो?” छड़ी ने पूछा.

“राजा के साथ युद्ध करने. उसने मेरी पत्नी को पकड़ लिया है.”

“मैं तुम्हारा साथ दूँगी. राजा ने क्रोध में मुझे मेरे पेड़ से तोड़ डाला था.”

“तो मेरे कान के अंदर आ जाओ,” पक्षी ने कहा. छड़ी आ गई.

राजा के महल के निकट पक्षी को एक नदी पार करनी थी.

“कहाँ जा रहे हो?” नदी ने पूछा.

“राजा के साथ युद्ध करने. उसने मेरी पत्नी को पकड़ लिया है.”

“फिर मैं तुम्हारा साथ दूँगी. राजा ने मेरे पानी को दूषित होने दिया है.”

“मेरे कान में बह कर आ जाओ,” पक्षी ने कहा.

तुम कल्पना कर सकते हो कि पक्षी का कान अब तक पूरी तरह भर चुका था, लेकिन नदी ने किसी तरह अपने लिए जगह ढूँढ ही ली.

फिर *रम पम पम, रम पम पम, रम पम पम पम पम,* पक्षी महल के फाटक के बिलकुल निकट आ पहुँचा.

ठक ठक ठक, उसने दरवाज़ा खटखटाया.

“कौन है?” पहरेदार ने चिल्लाकर पूछा.

“मैं सेनापति ब्लैकबर्ड हूँ,” उसने उत्तर दिया, “मैं राजा से युद्ध करने और अपनी पत्नी वापस लेने आया हूँ.”

पहरेदार ने बाहर देखा. जब उसने पक्षी को काँटे को तलवार समान पकड़े, मेंढक की खाल की ढाल लिए, अखरोट के आधे छिलके से बने शिरस्त्रान पहने और छिलके के दूसरे भाग से बना नगाड़ा पकड़े देखा तो वह इतने ज़ोर से हँसा कि वह अपने स्टूल से गिर ही गया. ऐसा मनोरंजक दृश्य उसने अब तक न देखा था. लेकिन उसके बाद उसने फाटक खोल दिया और पक्षी को लेकर राजा के सामने ले आया.

रम पम पम
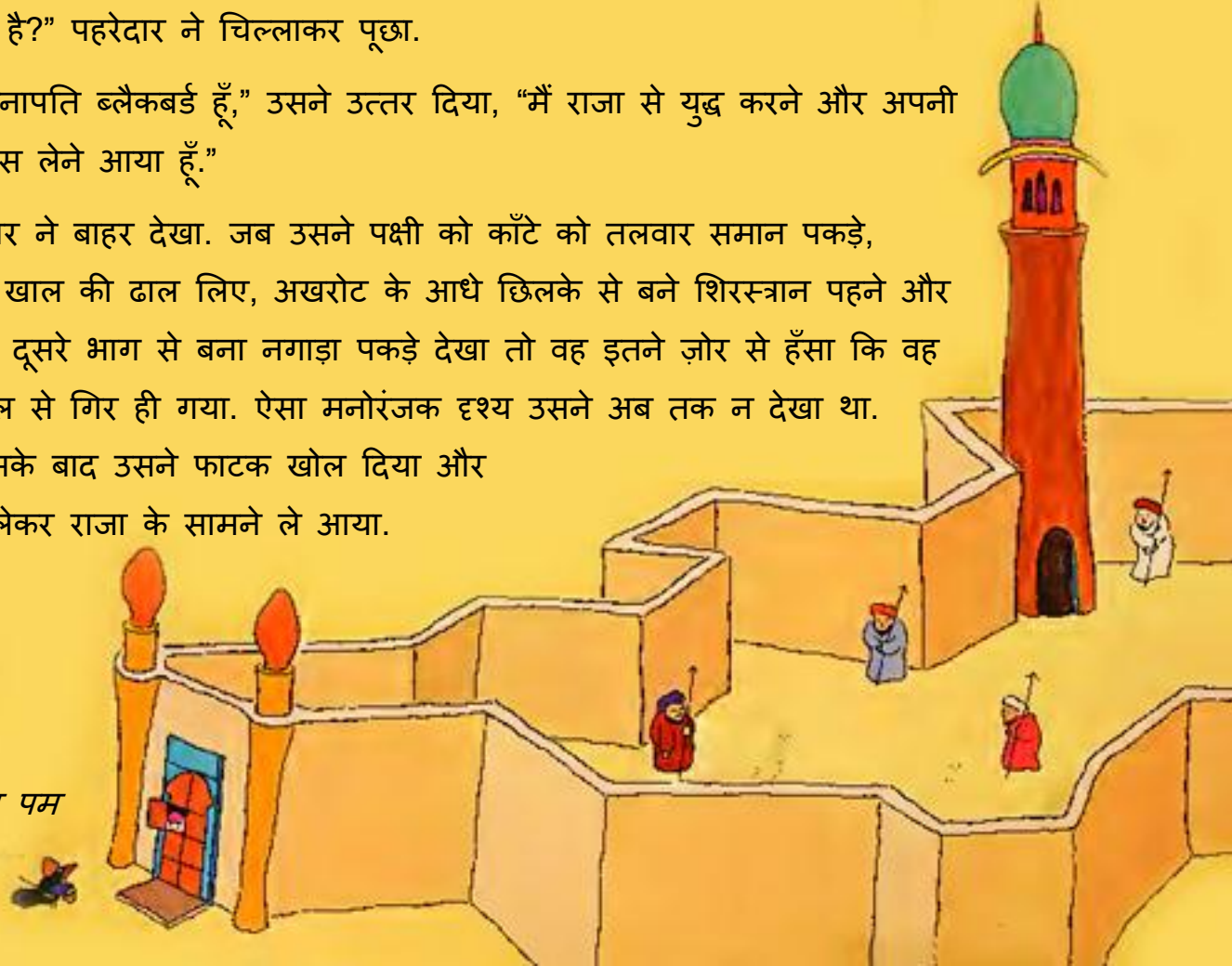
“क्या चाहिए तुम्हें?” राजा ने पूछा.

“मुझे मेरी पत्नी चाहिए,” ब्लैकबर्ड ने कहा.

“नहीं, तुम्हारी पत्नी तुम्हें नहीं मिलेगी,” राजा ने गुस्से से कहा.

“फिर आपको इसका परिणाम भोगना होगा,” पक्षी ने कहा.

इतना कह कर नगाड़ा बजाते-बजाते वह कमरे में घूमने लगा, *रम पम पम, रम पम पम, रम पम पम पम पम.*

“इस बदतमीज़ को पकड़ लो और आज रात इसे मुर्गियों के दरबे में फेंक दो,” राजा चिल्लाया. “मुर्गियाँ अवश्य इसका काम तमाम कर देंगी.”

राजा के सेवकों ने पक्षी को पकड़ लिया.

उस रात सेवकों ने उसे मुर्गियों के दरबे में फेंक दिया, उस समय सारी मुर्गियाँ सो रही थीं. जब सब ओर शांति हो गई और महल में हर कोई सो गया, तब पक्षी धीमी आवाज़ में गाने लगा,

"बाहर आओ बिल्ली, आओ मेरे कान से बाहर,

बहुत मुर्गियाँ हैं यहाँ और सो रही हैं सब यहाँ पर.

कान से बाहर आकर करो तुम इनका पीछा,

इनको तुम खूब दौड़ाओ, देखो न आगा-पीछा."

बस, बिल्ली कान से बाहर आई और लगी मुर्गियों का पीछा करने. क्या भागम-भाग हुई और कितना हो-हल्ला हुआ! जब सारी मुर्गियाँ दरवाज़े से निकल कर भाग गईं तो बिल्ली कूद कर पक्षी के कान के अंदर आ गई और सो गई.
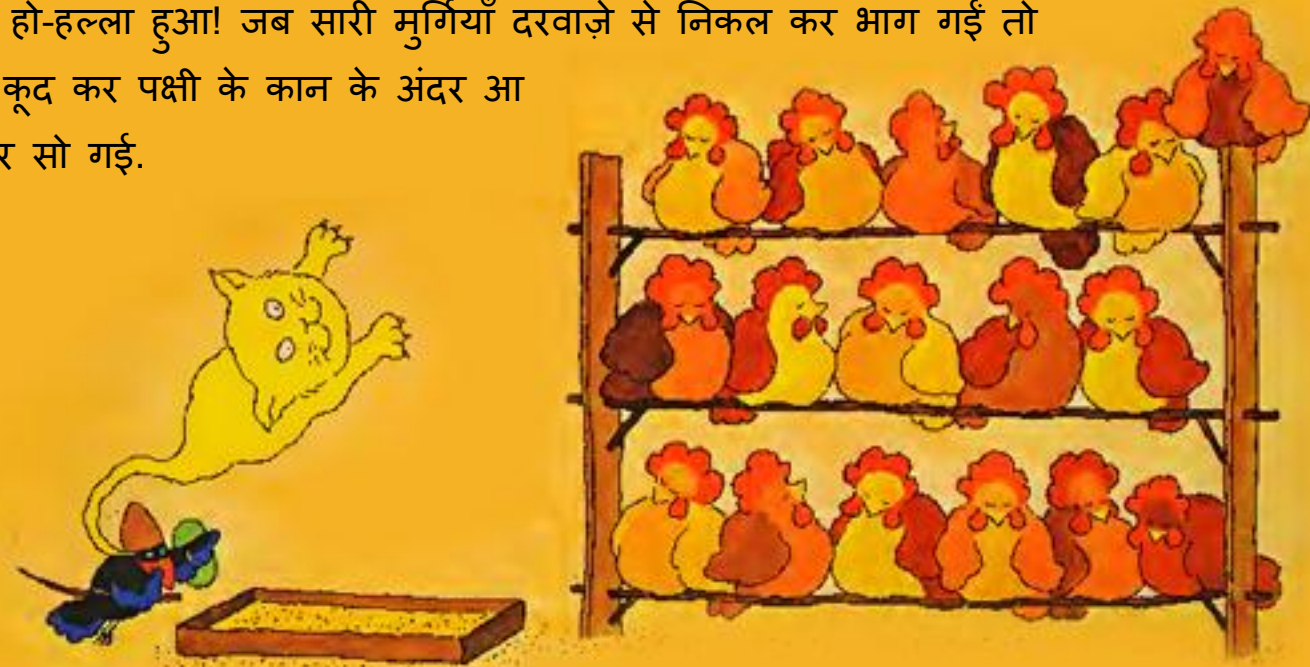
अगली सुबह राजा ने पक्षी का समाचार लाने के लिए सेवकों को भेजा. जब उसे पता चला कि मुर्गियाँ भाग गई थीं और पक्षी, *रम पम पम, रम पम पम, रम पम पम पम पम,* नगाड़ा बजाते हुए दरबे में घूम रहा था तो उसे बहुत गुस्सा आया.

"आज रात उस धृष्ट पक्षी को पकड़ कर जंगली घोड़ों के अस्तबल में फेंक दो," राजा चिल्लाया. "वह तुरंत उसका काम तमाम कर देंगे."

उस रात राजा के सेवकों ने पक्षी को पकड़ कर जंगली घोड़ों के अस्तबल में फेंक दिया. लेकिन इसके पहले कि वह उसे छू भी पाते वह उड़ कर एक शहतीर पर चढ़ कर बैठ गया. जब सब ओर शांति हो गई और महल में हर कोई सो गया, तब पक्षी धीमी आवाज़ में गाने लगा,

"कान से बाहर आओ छड़ी और मदद करो तुम मेरी.

घोड़ों की करो पिटाई करो न तुम कोई देरी.

इतनी पिटाई करो तुम सुबह हो जाने तक,

दरवाज़ा तोड़ कर भाग जायें सारे घोड़े सब."

छड़ी कान से बाहर आई और फिर उसने वैसा ही किया. फिर छड़ी पक्षी के कान में वापस आ गई.

अगली सुबह पक्षी का मृत शरीर लाने के लिए राजा ने सेवकों को भेजा. मृत शरीर के बजाय सेवकों ने देखा कि सब घोड़े भाग गए थे और पक्षी, *रम पम पम, रम पम पम, रम पम पम पम पम,* नगाड़ा बजाते हुए अस्तबल में घूम रहा था.

क्रोध में राजा आपे के बाहर हो गया. घोड़ों पर उसका बहुत धन खर्च हुआ था.

"उस पक्षी को आज रात हाथियों के बाड़े में फेंक देना," राजा चिल्लाया. "वहाँ उसका अंत हो जायेगा."

तो उस रात पक्षी को हाथियों के बाड़े में फेंक दिया गया. लेकिन इसके पहले कि हाथी नींद से उठ कर उसे अपने पाँव तले कुचल देते, पक्षी ने छिपने के लिए एक सुरक्षित जगह ढूँढ ली. जब सब ओर शांति हो गई और महल में हर कोई सो गया, तब पक्षी धीमी आवाज़ में गाने लगा,

"मेरे कान से बाहर आओ चींटियों मदद तुम मेरी करो,

झटपट हाथियों की सूँडों पर तुम चढ़ो.

सिर पर फिर उनको काटो तुम मिलकर सब,

तब तक काटो जब तक हाथी मर जायें न सब."

सारी चींटियाँ कान से बाहर आ गईं और हाथियों की सूँडों पर चढ़ गईं. वह हाथियों को उनके सिरों पर तब तक काटती रहीं जब तक कि हाथी पागल नहीं हो गए. गुस्से में वह एक-दूसरे को कुचलने लगे. जब सारे हाथी मर गए तो चींटियाँ पक्षी के कान में वापस चली गईं.
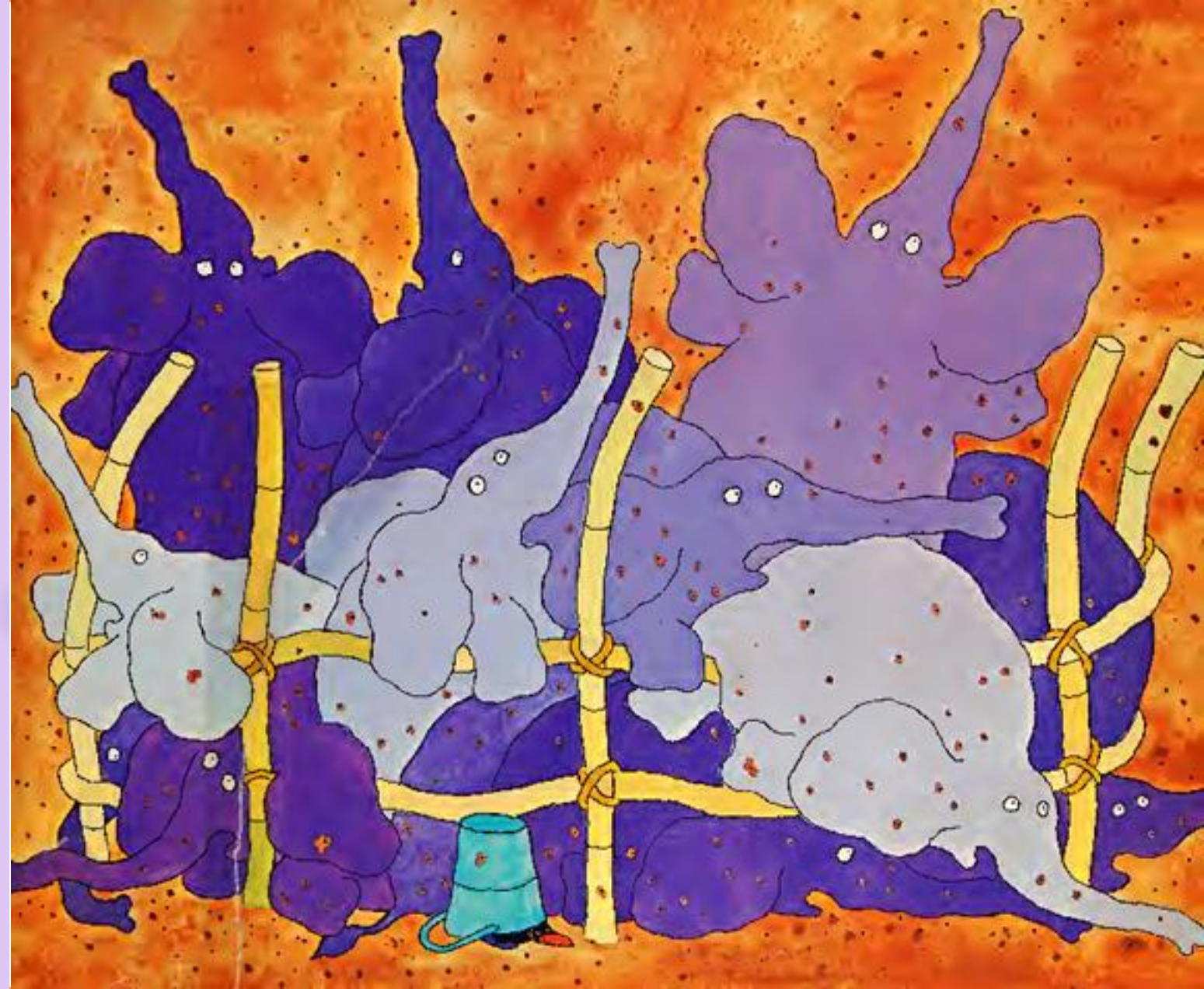
अगली सुबह पक्षी के अवशेष लाने के लिए राजा स्वयं बाड़े में आया. जब उसने सब हाथियों को मरा हुआ और पक्षी को, *रम पम पम, रम पम पम, रम पम पम पम पम,* नगाड़ा बजाते हुए बाड़े में घूमते देखा तो वह सिर्फ क्रोधित ही नहीं हुआ, वह निराश भी हो गया.

"मुझे समझ नहीं आता कि वह यह सब कैसे करता है," राजा बोला, "लेकिन मैं उस रहस्य का पता लगा कर रहूँगा. आज रात इसे मेरे पलंग के पाये से बाँध देना और फिर जो देखना है वह हम देखेंगे."

उस रात पक्षी को राजा के पलंग के पाये से बाँध दिया गया. जब सब ओर शांति हो गई और महल में हर कोई सो गया (राजा को छोड़कर, जो सिर्फ सोने का नाटक कर रहा था), तब पक्षी धीमी आवाज़ में गाने लगा,

"*बाहर आओ नदी, मेरे कान से आओ बाहर,*

और इस शयनकक्ष में घूमो तुम बाहर आकर.

कमरे को पानी से भर दो बिस्तर हो जाये ऊपर,

और बह जाओ तुम इस राजा के सिर के ऊपर."

नदी कान से बाहर आ गई और बहती गई, बहती गई, बहती गई. राजा का बिस्तर नदी में तैरने लगा. जब राजा भीगने लगा तो वह चिल्लाया, "ईश्वर के लिए, सेनापति ब्लैकबर्ड, अपनी पत्नी को लो और यहाँ से दूर चले जाओ!"

तो ब्लैकबर्ड को अपनी पत्नी मिल गई और वह उसे अपने घर ले आया.

वह अपने पेड़ पर सदा प्रसन्नता से रहे.

समाप्त